# संगठित वायब्रेशन से ही परिवर्तन

शिवबाबा की डायरैक्ट मुरली

## आध्यात्मिक विश्व विद्यालय

ऑडियो कैसेट नं.

411

ता.14.11.99


❍ दिल्ली : ए-1, 351-352, विजय विहार, पो. रिठाला, दिल्ली-110 085 (0) 9891370007 (0) 9311161007

❍ कम्पिला : नेहरु नगर, गंगा रोड, ग्रा.पो. कम्पिल, जि.फर्रुखाबाद (यू.पी.) 207505 (0)9580568954, 8419089916


---

**त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः–** "बेहद का बाप, ज्ञान का सागर, पतित–पावन, सद्गति दाता, गीता का भगवान शिव कैसे प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियों द्वारा फिर से कलियुगी, सम्पूर्ण विकारी, (ब्राह्मणों की) भ्रष्टाचारी, पतित दुनिया को सतयुगी, सम्पूर्ण निर्विकारी, पावन, श्रेष्ठाचारी (दैवी) दुनिया बना रहे हैं–वह खुशखबरी आकर सुनो अथवा समझो।"

(मु.25.10.66 पृ.1 मध्य)

---

<u>नोट :-</u> भारत और अन्य देशों में आध्यात्मिक परिवार के सदस्यों द्वारा अनेक शहरों में आध्यात्मिक गीता मंदिर एवं अनेक गाँव और कस्बों में सच्ची गीता-पाठशालाएँ चल रही हैं, जहाँ ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग की शिक्षा दी जाती है, जिनके पते निम्नलिखित व अगले पृष्ठ पर दिए गए अन्तर्राज्यीय आध्यात्मिक परिवारों से प्राप्त किए जा सकते हैं।


❍ **फर्रुखाबाद :** 5/26 ए, सिकत्तरबाग, जि. फर्रुखाबाद (उ.प्र.)209625 (0)9335683627 (0) 9721622053

❍ **लखनऊ$ :** एस./99 चंद्रमा मार्केट, भूतनाथ मेन मार्केट, पो.इंदिरानगर, लखनऊ–226016 (यू.पी.) (0)9369439863

❍ **चण्डीगढ़ :** हाऊस नं.634, केशोराम कॉम्पलेक्स, सैक्टर नं. 45 सी, पो.बुड़ैल, जिला–चण्डीगढ़ – 160047

### आध्यात्मिक परिवार

(पंजाब) (0)9357277591

❍ **जयपुर :** प्लॉट नं.211, ओमशिव कॉलनी, झोटवाड़ा, जयपुर –302012,(राजस्थान) (0)9309479091

❍ **कोलकाता :** सी.एल.–249, सैक्टर–2, सॉल्ट लेक सिटी, कोलकाता–700091(पश्चिम बंगाल) (0) 9330417213

❍ **भोपाल :** हाउस नं.एम.आई.जी.17, सैक्टर–3/सी, साकेत नगर, भोपाल (म.प्र.)–462021 (0) 9303612033

❍ **मुंबई :** प्लॉट नं.96 बी, 'सरोवर', डिसिल्वा नगर, नालासोपारा (वेस्ट), पो.सोपारा, तहसील–वसई,जिला – थाना–401203 महाराष्ट्र (0) 8554935822

❍ **हैदराबाद :** 29/3 आर.टी. प्रकाशनगर, पो.– बेगमपेट, हैदराबाद–500016 (आन्ध्रा) (0) 9394693379

❍ **बैंगलूर :** प्लॉट नं.8/2 बी, हेब्बागोडी मैन रोड, पो.बोम्मासन्दरा एनीकल तालुक, बैंगलोर–560099 (कर्नाटक) (0)7676872209

❍ **चेन्नई :** प्लॉट नं. 22 एण्ड 47, एन.जी.ओ.नगर, श्रीनिवासानगर पो. नं.9, अल्पाकम, जि. कांचीपुरम, चेन्नई –600063 (0)7806890793.

**Visit us at: www.a1spiritual.info**

**E-mail:- a1spiritual1@gmail.com**


(2/41/50) {1}

---

( सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार–कुमारियों के लिए )

बाबा से अनेक प्रकार की आत्माओं का संसर्ग–सम्पर्क होता है। बाबा से कोई आत्माओं की दूरी बढ़ती है, कोई की घटती है। बहुत सारी ऐसी बातें पैदा होती हैं जिससे दृष्टि, वृत्ति, कृति और वाचा चारों में अनेक प्रकार के फेर–बदल होते रहते हैं। शुरु–शुरुआत में जब कोई आत्मा ज्ञान में आती है, ईश्वरीय नॉलेज की गुह्यता को समझती है, तो सात्विक स्टेज में होने के कारण हलचल ना के बराबर होती है और बाद में आपस में अनेक आत्माओं के विचार सुनते–सुनते हलचल में आ जाते हैं; क्योंकि कानों से जो कुछ सुना जाता है, आँखों से जो कुछ देखा जाता है उसका असर जरूर पड़ता है। एक–दूसरे के विचारों को सुना जाता है, विचारों का लेन–देन किया जाता है तो बाबा की बातें धीरे–धीरे भूल जाते हैं और आपस में एक दूसरे की बातों का, दृष्टि का, वृत्ति का, वाचा का, कृति का संक्रमण होने लगता है। जो समर्पित वर्ग है उसमें भी वही होता है और जो अपने को समर्पित समझते हैं उनमें भी ये संक्रमण होता है। जो प्रैक्टिकल में समर्पित भी नहीं हैं और अपने को समर्पित नहीं समझते हैं उनका तो फिर कहना ही क्या। उनमें तो परिवर्तन होना ही होना है। अवस्था अप एण्ड डाउन होनी ही है। हालाँकि उनके लिये भी बाबा ने बताया हुआ है – गो सून, कम सून। बाबा

( सिर्फ प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों के लिए )

बाबा से अनेक प्रकार की आत्माओं का संसर्ग-सम्पर्क होता है। बाबा से कोई आत्माओं की दूरी बढ़ती है, कोई की घटती है। बहुत सारी ऐसी बातें पैदा होती हैं जिससे दृष्टि, वृत्ति, कृति और वाचा चारों में अनेक प्रकार के फेर-बदल होते रहते हैं। शुरु-शुरुआत में जब कोई आत्मा ज्ञान में आती है, ईश्वरीय नॉलेज की गुह्यता को समझती है, तो सात्विक स्टेज में होने के कारण हलचल ना के बराबर होती है और बाद में आपस में अनेक आत्माओं के विचार सुनते-सुनते हलचल में आ जाते है; क्योंकि कानों से जो कुछ सुना जाता है, आँखों से जो कुछ देखा जाता है उसका असर जरूर पड़ता है। एक-दूसरे के विचारों को सुना जाता है, विचारों का लेन-देन किया जाता है तो बाबा की बातें धीरे-धीरे भूल जाते हैं और आपस में एक दूसरे की बातों का, दृष्टि का, वृत्ति का, वाचा का, कृति का संक्रमण होने लगता है। जो समर्पित वर्ग है उसमें भी वही होता है और जो अपने को समर्पित समझते हैं उनमें भी ये संक्रमण होता है। जो प्रैक्टिकल में समर्पित भी नहीं हैं और अपने को समर्पित नहीं समझते हैं उनका तो फिर कहना ही क्या। उनमें तो परिवर्तन होना ही होना है। अवस्था अप एण्ड डाउन होनी ही है। हालाँकि उनके लिये भी बाबा ने बताया हुआ है - गो सून, कम सून। बाबा



के पास जल्दी आओ और जल्दी वापस जाओ। ईश्वरीय सेवा के लिए वापस जाना है। सागर में आकर बादल भरें और वापस जाकर बरसें। खाली हो जाएं फिर बाबा के पास आएं; लेकिन होता क्या है? बाहर की दुनियाँ में जाकर बाहर की दुनियाँ का ऐसा रंग लगता है, ऐसा संग लगता है कि बाबा की बातें भूल जाते हैं। गलतियाँ भी करते रहते हैं। कोई-कोई पोतामेल भी लिखते रहते हैं और लिखकर बाबा के पास भेजते भी रहते हैं। कोई तो लिखते ही नहीं; लेकिन पोतामेल एक बार माफ होगा, दो बार माफ होगा, तीन बार माफ होगा, बार-बार कहाँ तक माफ होगा? <u>जब तक बाबा के सामने पहुँचेंगे नहीं, एक दूसरे से जो लेते हैं उन ली हुई बातों का जो असर पड़ता है वो भूलेगा कैसे?</u> अपने अन्दर ही उसको घुमाकर सेट कर लेते हैं। पूछते भी नहीं, वेरिफाय कराने की जरूरत नहीं समझते हैं और अंदर ही अंदर फिर घुटते रहते हैं। कुछ फैसला कर लेते हैं। कुछ ठंडे हो जाते हैं। कुछ एक दूसरे के ऊपर दोषारोपण करने लग पड़ते हैं और ऐसे होते-होते अवस्था बिल्कुल नीचे चली जाती है। ये तो हुई नॉन सरेंडर्ड वर्ग की बात अथवा उनकी बात जो अपने को सरेंडर नहीं समझते हैं।

जो समर्पित हैं उनमें भी दो प्रकार के हैं- एक तो ऐसे हैं कि जिन्होंने पूरी बात को समझा नहीं है, माँ-बाप ने उनको



अर्पण कर दिया है और मजबूरी में आकर बैठ गये। तो उनकी बुद्धि-वृत्ति तो बाहर की दुनियाँ में ही जायेगी। भल मधुबन में बाबा के पास रहते हैं या बाबा ने जो स्थान निश्चित किये हैं, मिनी मधुबन बनाये हैं उन स्थानों पर रहते हैं; लेकिन बात की गहराई को न समझने के कारण उनकी दृष्टि और वृत्ति बाहर की दुनियाँ में जाती है। उनका भी किनारा नहीं लगता। भले सुबह से लेकर शाम तक, शाम से लेकर सुबह तक वातावरण उनको अच्छा मिला हुआ है। ज्ञान का वातावरण मिला हुआ है। तीन-चार बार योग का वातावरण मिला हुआ है; लेकिन बुद्धि का जितना संग होगा उतनी ही प्राप्ति होगी। वो भी रह जाते हैं। थोड़ी-सी आत्माएँ ऐसी हैं जो वास्तव में समर्पित भी हैं, अपने को समर्पित समझती भी हैं और बाबा जैसे चलाना चाहता है, जो बात सुनाना चाहता है उसको वैसे ही धारण करती हैं और चलती हैं; लेकिन अंतर क्या पड़ता है? अंतर हुजूम का पड़ता है। एक तो बाहर की दुनियाँ से आने वाले जिज्ञासु, बीकेज़ से आने वाले जिज्ञासु और अंदर के ब्राह्मण परिवार के मतलब एडवान्स पार्टी के ही कुछ ऐसे जिज्ञासु जो अंदर से बहुत तहस-नहस हुए पड़े हैं उनकी बातें सुन सुनकर उनके ऊपर असर पड़ता है। बाबा के संसर्ग-सम्पर्क में रहते हुए भी उनमें कोई-कोई में ऐसा होता है कि बाबा से पूछने की हिम्मत नहीं पड़ती। ये भी यही



कहेंगे कि पूर्व जन्मों का हिसाब-किताब है। जो आत्माएँ अनेक जन्म बाबा के संसर्ग-सम्पर्क में रही हैं उनको तो कोई आपत्ति नहीं होगी। बाबा से पूछेंगे, मिलेंगे, जुलेंगे, कोई बहाना बनाने का उनको मौका नहीं मिलता; लेकिन ये सबके साथ तो एक जैसा हो नहीं सकता। बहुत-सी आत्माएँ ऐसी हैं जो दूसरों के प्रभाव में आ जाती हैं, संगी-साथियों के प्रभाव में आ जाती हैं और बाबा से उतना संसर्ग-सम्पर्क नहीं रख पातीं। टोटल मिलाकर ब्राह्मण परिवार की चौथी अवस्था आ जाती है। जैसे कि अभी तक पोतामेल आ रहे हैं। जिनसे ये देखा जाता है कि जो पुराने-पुराने हैं वो अंदर-अंदर में बहुत-सी बातों को लेकर घुटते हैं; लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। घुटते-घुटते ये हालत पैदा हो जाती है कि जो दैनिक क्लासेज है वो भी करना छोड़ देते हैं।

जिस उमंग-उत्साह से जिस समय गीतापाठशालाएँ बनाई गई थी और जिस उमंग-उत्साह से उस समय शुरुआत में जाते थे, लेन-देन करते थे, सेवा करते थे, सर्विस के समाचार सुनाते थे, उन सब बातों में ठंडास आती जाती है। भले संगठन के प्रोग्रॉम होते हैं तो इकट्ठे हो जाते हैं। वो इकट्ठा होना भी अपनी प्योरिटी की यूनिटी के आधार पर नहीं है। वो सिर्फ ज्ञान की ऐसी यूनिटी है, ज्ञान की ऐसी पराकाष्ठा है जो इस समय

उनको चला रही है। अभी ये इन्डीविजुअल प्योरिटी बढ़ाई कैसे जाये? प्योरिटी चार प्रकार की है। सबसे ऊँची ते ऊँची और गहरी ते गहरी प्योरिटी है - वृत्ति की, वायब्रेशन्स की। जो पवित्र आत्माएँ होंगी वो जितनी जास्ती पवित्र होंगी उनके वातावरण में आने मात्र से दूसरे उतना ही सुख का अनुभव, शाँति का अनुभव करेंगे। उनके वायब्रेशन चेंज होने लगेंगे। बहुत-सी बातें पूछे बगैर ही उनका समाधान हो जायेगा। जैसे परमधाम से जास्ती पवित्र धाम कोई नहीं होता। ऐसे ही उन आत्माओं के वायब्रेशन इतने पवित्र होंगे कि दूसरे जैसे-जैसे उनके नजदीक पहुँचेंगे, तो नजदीक आने मात्र से ही उनमें परिवर्तन दिखाई देगा। ये हुई वृत्ति की पवित्रता। वृत्ति कहते हैं हरेक मनुष्य आत्मा के मन से जो वायब्रेशन फैलते हैं, वायब्रेशन का जो चक्र चारों तरफ फैलता है वो चक्र है वृत्ति की पवित्रता। जिस प्योरिटी की पराकाष्ठा से राधा-कृष्ण का जन्म होगा। आपने लक्ष्मी- नारायण के चित्र में देखा होगा राधा-कृष्ण फिर भी एक दूसरे से दृष्टि ले रहे हैं, उनकी पवित्र दृष्टि का संक्रमण एक-दूसरे में हो रहा है। मतलब राधा की दृष्टि कृष्ण में डूब रही है और कृष्ण की दृष्टि राधा में डूब रही है। उनको दृष्टि का मेल दिखाया गया है; लेकिन उनसे भी ऊपर की स्टेज में जो लक्ष्मी-नारायण खड़े हैं वो एक-दूसरे को दृष्टि से भी नहीं देख रहे। उनमें कौन सी



ऐसी शिफ्त है कि दृष्टि से संक्रमण किए बगैर, मिले बगैर राधा-कृष्ण जैसे श्रेष्ठ बच्चों को जन्म देते हैं? बाबा के समय का "30X 40" का लक्ष्मी- नारायण का जो पुराना चित्र है उसमें राधा-कृष्ण के ऊपर जो लक्ष्मी-नारायण खड़े हुए हैं वो कौन-सी वृत्ति में खड़े हैं? उनकी दृष्टि एकदम सामने है या एक दूसरे को देख रहे हैं? देखते भी नहीं हैं। मात्र वृत्ति से ही उनका संक्रमण हो रहा है, संसर्ग हो रहा है। कोई कहेगा ये कैसे हो सकता है? मोर का मिसाल राधा-कृष्ण के लिए लागू हो सकता है कि मोर-मोरनी आँसू पीते हैं। आँखों से निकला हुआ जल पीने से उनका संसर्ग हो जाता है; लेकिन वृत्ति मात्र से संसर्ग कैसे संभव है? जैसे पपीते का पौधा होता है, उसमें ये सिफ्त है कि उसका नर वृक्ष और मादा वृक्ष मीलों दूर से अपने वृत्ति रूपी पराग को खींच लेता है। नर की वृत्ति मादा खींचती है। दूर से ही खींचती है और उसमें फल आने लग पड़ते हैं। तो जड़ पौधों में जब ये वृत्ति होती है और इतनी दूर से वो अपना बीज खींच सकते हैं तो मनुष्य उनसे ज्यादा पावरफुल है। मतलब साढ़े चार लाख जो जन्म देने वाले मात-पिता हैं, जो विशेष चुनी हुई एडवान्स पार्टी की आत्माएँ हैं उनको उस स्टेज तक पहुँचना पड़ेगा जो लक्ष्मी-नारायण के चित्र में लक्ष्मी-नारायण की स्थिति दिखाई गई है। उस प्योरिटी से राधा-कृष्ण जैसे श्रेष्ठ 16 कला सम्पूर्ण बच्चों का



जन्म होगा। राधा-कृष्ण उस ऊँची स्टेज तक नहीं पहुँच सकते। वो दृष्टि मात्र की प्योरिटी तक ही पहुँचेंगे; लेकिन उनके माँ बाप 16 कला सम्पूर्ण से भी ऊपर पहुँचेंगे। वो सूर्यवंशी कहे जाते हैं। सूर्य कभी कलाओं में नहीं बाँधा जाता। सूर्यवंशी बच्चों की भी कलाएँ कभी बाँधी नहीं जा सकती। वो वृत्ति मात्र से ही इतने पावरफुल होंगे कि जो कार्य आज विज्ञान कर रहा है, चमत्कार कर रहा है, बिना तार के आधार पर बेतार का तार वायरलेस या कम्प्यूटर कहिए, दूर बैठे ही सारे वायब्रेशन्स खींच लेता है, सारी आवाज खींच लेता है, चित्र भी दिखाय देता है जबकि स्थूल कनेक्शन कुछ भी नहीं है। ऐसी स्थिति हम आत्माओं की भी बनेगी। हम आत्माओं की ये स्थिति उस समय जब बनेगी हम दूर बैठे भी कोई से बात कर सकेंगे। कोई के वायब्रेशन ले सकेंगे। वो मनमनाभव की पराकाष्ठा की स्टेज होगी। स्पष्ट किसी का चित्र देख सकेंगे। ऐसी कॉन्संट्रेशन की तीव्रता होगी। इस स्थिति तक हम बच्चों को पहुँचना है; लेकिन अभी स्थिति क्या है? पहले बाबा मुरलियों में बोला करते थे कि - बच्चे वाचा से कोई विकर्म हो जाता है; लेकिन कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना। अगर कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म हुआ, मतलब व्यभिचार हुआ , पाप कर्म हुआ " एक बाप दूसरा न कोई " इस वृत्ति से नीचे उतरकर वाचा से, दृष्टि से या कर्मेन्द्रियों से कोई



और से संसर्ग किया तो पाप बन जायेगा। अभी तो अव्यक्त वाणियों में बोलने लग पड़े हैं कि बच्चे मंसा से भी अगर तुम गलत संकल्प करते हो, व्यभिचारी संकल्प करते हो तो उसका भी पाप बनता है। पहले ज्ञान कम था। अभी हम बच्चों के अंदर ज्ञान ज्यादा है। जो जितना ज्यादा ज्ञानी है उसको तो और ज्यादा एलर्ट रहना पड़े; लेकिन बजाय एलर्ट रहने के अलबेलापन और ही ज्यादा बढ़ता जाता है। ऊँचे उठने की एक ही इकाई बताई कि बच्चे अपना अमृतवेला सुधार लो। अमृतवेला सुधारा तो सब सुधर जायेगा; लेकिन अभी हाथ उठवाया जाए कि पौने पाँच बजे से पहले दस मिनट, पन्द्रह मिनट, बीस मिनट, आधा घंटा या एक घंटे का पुरुषार्थ रेग्युलर कौन-कौन करते हैं? तो कितने हाथ उठायेंगे? उठाइये ज़रा। देखो भाइयों के हाथ बहुत कम उठे हुए हैं और कन्याओं-माताओं के हाथ ज्यादा उठे हुये हैं। लौकिक पढ़ाई में भी ऐसे ही होता है। लौकिक पढ़ाई में भी जो बच्चे हैं वो कम पास हो रहे हैं और जो बच्चियाँ हैं वो ज्यादा पास हो रही हैं और पास होने के बाद काम भी अच्छा करके दिखाती हैं; लेकिन यहाँ तो प्रवृत्तिमार्ग है। पांडवों के लिए बोला है - शक्तियों से शक्ति लेकर आगे बढ़ते रहें और शक्तियाँ पाण्डवों से सहयोग लेकर आगे बढ़ती रहें। पांडवों के बगैर शक्तियाँ नहीं चल सकतीं, शक्तियों के बगैर पाण्डव नहीं चल सकते। दोनों

के बीच में है ''शिवबाबा''।

अब कारण क्या है जो इतना अलबेलापन आता जाता है? कारण है - आपस में ही एक-दूसरे से लेन-देन करके, एक-दूसरे से संतुष्ट हो जाना। बाबा कहते हैं - दिल की बात दिलावर से कहो, आपस में ही एक-दूसरे को दिलावर बना लेते हैं। आपस में ही एक दूसरे की दिल लेने और दिल देने वाले बन जाते हैं, तो बाबा एक तरफ हो गया ना? बाबा भी अपनी नजर घुमा के दूसरी तरफ बैठ जाता है। अब क्या करना है? करना ये है कि जब-जब अपनी अवस्था नीचे उतरती है तो उसका कारण देखना चाहिए। बाबा ने ये बताया है - कि बच्चे याद और सेवा इन दोनों का बैलेन्स जरुर रखना है। याद में भी रहें और सेवा भी करें; लेकिन या तो याद करने में लग जाते हैं वो भी बैठने वाली याद या तो सेवा करने में लग जाते हैं। उस समय बाबा की याद भूल जाती है; क्योंकि बाबा से प्यार ही नहीं है, तो याद कैसे होगी? याद कोई दूसरी चीज थोड़े ही है। याद माना प्यार और प्यार भी नकली नहीं कि आधा प्यार बाबा से और आधा प्यार दूसरों से। नहीं, बाबा तो चाहते हैं - ''मामेकम्'' याद करो और किसी को बीच में नहीं डालो अगर और किसी को बीच में डाला तो पाप भस्म नहीं होंगे। निरंतर याद होनी चाहिए, लगन पूर्वक याद होनी चाहिए, तो फिर सहज भी होगी।



तो पछताना पड़ता है कि ऐसा होता क्यों नहीं है? या कभी-कभी होता है कभी नहीं होता है। ये बात ठीक है- 63 जन्मों के जो हिसाब-किताब हैं वो लास्ट जन्म में आकर बहुत जोर मारते हैं। जिन आत्माओं को अभी अपनी परिपक्व स्टेज दिखाई भी पड़ती है कि मंजिल के नजदीक हैं वो भी बहुत ऊपर-नीचे हो रहे हैं। जिसके लिए बाबा ने बोला है - कि 100 मणके तो फिर भी पुरुषार्थ में अप-एण्ड डाउन में ज्यादा नहीं आते हैं; लेकिन आठ जो हैं वो सबसे ज्यादा ऊपर-नीचे हो रहे हैं। अभी-अभी एकदम ऊँची स्टेज में और अभी-अभी एकदम डाउन। तो जो आठ हैं वो जब ऊपर-नीचे होंगे तो उनके नीचे कार्य करने वाली उनके ग्रुप की जो दूसरी आत्माएँ हैं वो तो जरुर ऊपर-नीचे हो जायेंगी। फिर यूनिटी बनेगी कैसे? अकेला चना कभी भाड़ नहीं फोड़ सकता। एक को जब अनेकों का सहयोग मिलता है तो परिवर्तन जरुर होता है। जैसे बाबा ने बोला -''दे दान तो छूटे ग्रहण''। किसका ग्रहण छूटे? अरे! ग्रहण किसको लगता है? सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण माना जाता है कि उनको ग्रहण लगता है। ज्ञान में हम ये समझते है कि ये विकारों का ग्रहण सूर्य को तो नहीं लगता। सूर्य तो आग का गोला है। उसके ऊपर पृथ्वी की या चंद्रमा की परछाया पड़ ही नहीं सकती। वो तो निर्लेप आत्मा है। तो हम ज्ञान में जानते हैं कि चंद्रमा के ऊपर लेप छेप लगता है।



वो प्रभावित होता है। धरणीरूपी कन्याओं-माताओं का प्रभाव या परछाया चन्द्रमा के ऊपर पड़ सकता है और वो अंधेरे में आ सकता है। तो बाबा ने बोला है - ''दे दान तो छूटे ग्रहण''। चंद्रमा की आत्मा को तो बाबा श्रेष्ठ समझते हैं। श्रेष्ठ समझने के कारण ही ''ब्रह्मा'' ''चंद्रमा'' को सबसे आगे बढ़ाया हुआ है। तो हम बच्चों का भी फर्ज बन जाता है कि हम उस आत्मा को सबसे जास्ती योगदान दें। कौन सा दान देना है? (किसी ने कहा विकारों का दान) विकारों का दान! अरे, विकारों का दान तो शिवबाबा को देना है; लेकिन आत्माओं को आपस में कौन सा दान देना है? उन आत्माओं में भी जो श्रेष्ठ आत्मा है उसको कौन सा दान देना है? योग दान। योगदान माना वायब्रेशन का दान। जैसे कोई नजदीकी सम्बन्धी होता है, उससे हमारा बहुत प्यार होता है तो हमारे दिल में ये भावना पैदा होती है कि ये आत्मा भी ज्ञान में आ जाये। अमृतवेले उठकर हम उस आत्मा को विशेष सर्चलाइट देते हैं और वो परिवर्तन हो जाती है। तो ऐसे ही वो नइया सत्य की नइया है। डोलती है; लेकिन डूब नहीं सकती। हम बच्चे जानते हैं नइया डोल रही है। डूबने का तो सवाल ही नहीं। डोलनी भी नहीं चाहिए। अभी अंत समय आ गया। हम बच्चों के वायब्रेशन्स से वो परिवर्तन होना है तो जरुर होगा। परिवर्तन संगठित वायब्रेशन्स से ही तो होता है अगर होना



नहीं है तो स्वर्ग की स्थापना भी नहीं होनी है। संगठित वायब्रेशन का असर पड़ता है। जो भी धर्म पिताएं हैं उन्होंने मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारे आदि में ये नियम बनाया कि सब एक स्थान पर इकट्ठे हों। उस स्थान और उस टाइम का भी बहुत महत्व हो जाता है जहाँ सब इकट्ठे होते हैं। एक तरह का पर्व हो जाता है। वायब्रेशन का जो जखीरा है उसका प्रभाव एक जगह इकट्ठा होने से पड़ता है। वो प्रभाव तत्कालीन असर करता है। अभी हम ब्राह्मण बच्चों को ये देखना है कि बाबा मनमनाभव-मनमनाभव कितने वर्षो से बोल रहे हैं इसका अर्थ तो हम बच्चों ने समझ लिया कि जो बाप का संकल्प सो बच्चों का संकल्प यही मनमनाभव है। तो बाप इस समय क्या चाहता है? जो बाप चाहता है वो इच्छा हम बच्चे पूरी करें। वही संकल्प चलायें, वही वाचा चलायें, कर्मणा से वही कार्य करें, जिससे वो कार्य सम्पन्न हो। ......... ऐसा सम्पन्न संगठन बने जैसे- रुद्रमाला और विजयमाला। लेकिन विजयमाला बाद की चीज है पहले तो जो सूर्यवंशियों की रुद्रमाला है उसमें ही दायीं और बायीं ओर दो ग्रुप्स हैं। मुख्य रुप से कहें सूर्यवंश और चंद्रवंश। ब्रह्मा है ''चंद्रवंश'' का और बाप है ''सूर्यवंश'' का। ब्रह्मा माँ ज्ञान चंद्रमा है और बाप प्रजापिता ज्ञान सूर्य है। इन दोनों का अगर दृष्टि में, वृत्ति में, वाचा में, कर्मेन्द्रियों से एका नहीं होता तो

ब्राह्मणों में कभी एका नहीं हो सकता। पहले एक इकाई सुधरेगी फिर नम्बरवार दूसरी इकाईयों के सुधरने की बात है।

''बी'' साइड(कैसेट)

संगठन की पावर बहुत कुछ कर सकती है। वृत्ति के आधार पर हम दूर बैठकर भी बड़ी भारी सेवा कर सकते हैं। ये संगठन की शक्ति प्योरिटी से आती है। जिन-जिन आत्माओं ने संगमयुग में जितनी-जितनी प्योरिटी इकट्ठी करने का पुरुषार्थ किया होगा, वो उतना ही सहयोग दे सकेंगी अगर पुरुषार्थ नहीं किया होगा या कम किया होगा या जैसा किया होगा तो सहयोग भी उतना ही दे सकेंगी। अभी अंत समय है। अभी तो बाबा मन्सा सेवा के ऊपर बहुत जोर दे रहे हैं। 60-62 वर्ष हो चुके वाचा की कितनी भारी सेवा की है। भागदौड़ करके कर्मेंद्रियों से भी कितनी जबरदस्त सेवा की है। उस सेवा से रिजल्ट कितना निकला? रिजल्ट ना के बराबर निकला। अभी याद करते-करते प्रैक्टिस जरुर नम्बरवार ऐसी हुई है कि बच्चे अगर हिम्मत करें तो ब्राह्मणों की दुनियाँ में खासकर एडवान्स पार्टी के अंदर बहुत बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं। पहले घर का सुधार फिर पर का सुधार। अपने घर के अंदर ही अगर पूरा परिवर्तन नहीं हुआ है तो बाहर परिवर्तन कैसे होगा? घर कोई ईटों को तो नहीं कहा जाता है। एडवांस पार्टी के ब्राह्मण परिवार में पहले घर की पहली



इकाई तो मात-पिता हैं और मात-पिता के वायब्रेशन मिलकर जब तक एक नहीं होंगे तब तक बच्चों में परिवर्तन नहीं आ सकता। ये बच्चों के हाथ में है, जैसे- यज्ञ के आदि में हुआ, स्थापना के साथ-साथ यज्ञ कुंड से विनाशज्वाला भी प्रज्वलित हुई। निमित्त कौन बनें? ब्रह्मा, बाप और आहुति का काम किसने किया? ब्राह्मण बच्चों ने। ऐसे तो ब्राह्मण बच्चों को पहले-पहले साक्षी रहना चाहिए; लेकिन ऐसा हो नहीं सकता; क्योंकि बच्चा जब पैदा होता है तो माँ से पैदा होता है, माँ का प्यार लेता है, तो माँ के तरफ रूझान तो हो ही जाता है। माँ की तरफ ज्यादा रुझान होने के कारण सारा प्यार बच्चे का माँ की तरफ और माँ का बच्चे के तरफ जाता है। भल बच्चा बाद में समझदार होता है; लेकिन माँ के प्यार का पहला फाउंडेशन बच्चे की तरफ और बच्चे का माँ की तरफ पड़ गया ना। ये तो बाप का ज्ञान है कि हमको ब्रह्मा के द्वारा बाप से ही वर्सा मिलता है। जैसे- ये माइक रखा हुआ है। माइक के द्वारा आवाज फैलती है; लेकिन बोलने वाला होगा तभी तो आवाज फैलेगी। तो ऐसे ही बाप है वर्सा देने वाला; लेकिन बीच में मीडिया ब्रह्मा निमित्त बना हुआ है अगर माइक में ही मशीनरी खराब होगी, खिर्र -खिर्र की आवाज होगी तो आवाज चारों तरफ ठीक से पहुँचेगी नहीं। ऐसे ही माता मीडिया है। जैसे लौकिक दुनियाँ में घर-



परिवार को सम्भालने में, स्वर्ग बनाने में या नर्क बनाने में माँ का सबसे बड़ा योगदान होता है। माँ इतना बड़ा योगदान देती है, इतना बड़ा सहयोग करती है कि अपने को क्या लेना है वो भी भूल जाती है। भारतीय परम्परा में तो अभी तक ऐसा होता रहा है- छोटी बच्ची है तो माँ-बाप के प्रति समर्पित है, शादी हो जाती है तो पति के प्रति समर्पित है, पति शरीर छोड़ देता है तो माँ बच्चों के अधीन हो जाती है। बच्चों के प्रति समर्पित हो जाती है। भारतीय परम्परा में माता को वर्सा नहीं मिलता रहा। माता सब कुछ बच्चों के लिए अर्पण करती रही है। माँ खुद वर्सा लेने की परवाह नहीं करती है। बच्चों को वर्सा दिलाने के निमित्त बनती है।

वही कार्य अलौकिक परम्परा में भी होता है कि जो जगतमाता है वो फाउंडेशन के पत्थर का काम करती है। फाउंडेशन का जो पत्थर है वो जमीन के अंदर गाड दिया जाता है। किसी को दिखाई नहीं पडता, कोई जानता नहीं ये सारा मकान, ये सारे मकान की नींव उसके ऊपर है। ऊपर के कंगूरे सबको दिखाई पड़ते हैं। कंगूरों की शोभा सबको दिखाई पड़ती है; लेकिन फाउंडेशन के बारे में महिमा बाप आकर करते हैं। जैसे कि कोई भी मुरली को उठा लिया जाये तो देखेंगे कि गीता माता की जितनी महिमा मुरली में की होगी, भारत माताओं की



जितनी महिमा मुरली में बाप करते हैं उतनी और किसी ने नहीं की होगी। कहते हैं कि बाप माताओं के लिए आये हैं। ऐसा कहने में कन्याओं को कोई फीलिंग आने की बात नहीं है। बाबा कहते हैं- मैं कन्याओं को भी माता बना देता हूँ; तो सभी कन्याएं भी जगतमाताएँ हो गईं। प्योरिटी का माद्दा कन्याओं को सबसे ज्यादा आगे बढ़ाता है। भारत की माताएँ जो स्वर्ग का दरवाजा खोलने वाली हैं, ज्ञान में आने के बाद उनकी दृष्टि की प्योरिटी, वृत्ति की प्योरिटी, वाचा की प्योरिटी और कर्मेंद्रियों की प्योरिटी ये सबसे बडा काम करती है। पवित्रता के आधार पर ही परिवर्तन होता है। तीन मूर्तियाँ हैं - ब्रह्मा की मूर्ति, शंकर की मूर्ति; लेकिन परिवर्तन शक्ति विष्णु की मूर्ति में नूँध हुई है। ब्रह्मा के द्वारा यज्ञ में 30-33 वर्षों तक काम हुआ, शंकर के द्वारा भी 30-33 वर्ष कार्य होता है; लेकिन परिवर्तन अंत समय में तभी जाकर होता है जब पवित्रता की प्रतिमूर्ति विष्णु अर्थात् वैष्णव देवी, प्रत्यक्ष होती है।

बाबा तो कहते हैं - हर आत्मा ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तीनों का पार्ट अदा करने वाली है। हर आत्मा के अंदर ये तीन पार्ट नूँधे हुए हैं। हर आत्मा अपने लिए नं.वार ब्रह्मा है, विष्णु है, शंकर का पार्ट अदा करने वाली है। हम बच्चों को अब अपनी वैष्णवी वृत्ति को जगाने का टाइम आ गया है। अभी परिवर्तन होना ही

होना है ये बुद्धि में पक्का करना चाहिए। 63 जन्म कुम्भकर्णी आत्माओं के प्रभाव में आते रहे। बाबा कुम्भकरण किसे कहते हैं? कुम्भकरण भारतवासी हैं या विदेशवासी हैं? भारतवासियों को कुम्भकर्ण कहते हैं। ज्यादा गुरुलोग कहाँ हुए हैं? भारत में। जो गुरुगिरी ज़्यादा करते हैं, दूसरों को अपने तरीके से मोल्ड कर लेते हैं वे ही गुरु होते हैं। वे गुरु कोई 63 जन्म में ही नहीं हुए हैं। ऐसे भी नहीं वो गुरु कोई ब्रह्माकुमारियों में ही बैठे हुए हैं। वो गुरु हमारे एडवान्स पार्टी के बीजरूपों में भी बैठे हुए हैं। बाबा जो बातें बतायेंगे उन बातों को अपने स्वार्थ के अनुरुप मोड़कर उनको अपने तरीके से बताने के आदी हैं। खुद भी अपनी अवस्था खराब करते हैं और दूसरों की भी अवस्था खराब कर देते हैं। खुद भी अपना सत्यानाश करते हैं और दूसरों का भी सत्यानाश कर देते हैं। जैसे बाबा कहते हैं गुरु लोग भोजन कैसे खाते हैं? भोजन जब खाते हैं तो सारी थाली ही साफ करके धोकर पी जाते हैं। वो हद के भोजन की बात नहीं है। बाबा कोई हद के भोग लगाने की बात नहीं करते हैं। वो सन्यासियों का बेहद का प्योरिटी का भोजन है। जो भी आत्मा उनके हाथ में आती है सारी सफाई करके रख देते हैं। तन-मन-धन से भी सारी आत्मा अर्थात खोखली कर देते हैं।

बाबा कहते हैं- एक से सुनो और एक को सुनाओ;



लेकिन हम बच्चे क्या करते हैं? अनेकों से सुनते हैं और अनेकों को सुनाते हैं। बाबा कहते हैं- एक से सुनना ये है अव्यभिचारी ज्ञान और अनेकों से सुनना ये है व्यभिचारी ज्ञान। ऐसे ही दृष्टि में भी, वृत्ति में भी और कर्मेन्द्रियों के संसरण में भी हम उन गुरुओं से प्रभावित होते रहते हैं। जिसका रिजल्ट ये निकलता है कि हमारी प्योरिटी की थाली सफाचट्ट हो जाती है। इसलिए बाबा ने उनका नाम रखा है - हिरण्याकश्यप। हिरण्य माना सोना, काश्य माना तेज, प माना पीने वाले। जो सोने जैसी सच्ची-सच्ची आत्माएँ हैं उनके योगबल रुपी, लगन रुपी जो काश्य तेज है उसको पीने वाले हैं। सारा ही पी जाते हैं। इसलिए उनका नाम रखा गया है हिरण्याकश्यप। तो ऐसी-ऐसी आत्माएँ जो बाबा की बात को मोड़ अपने तरीके से, अपने स्वार्थ में लगाने वाली हैं उनसे इस समय बच कर रहना बहुत जरुरी है। किसी से प्रभावित नहीं होना चाहिए। किसी भी मनुष्य गुरु से प्रभावित हुए माना उसकी प्रजा बन गए। हमें तो बाबा राजा बनाने के लिए आया है या किसी से प्रभावित होने वाली प्रजा बनाने के लिए आया है? हमें क्या बनना है? राजा बनना है। रानी भी नहीं। रानियाँ फिर भी राजा से प्रभावित होती हैं। हमें विजयमाला में भी नहीं जाना है। बाप की माला है रुद्रमाला। राजाओं की माला जो जन्मजन्मांतर राजा बन करके रहे हैं।



राजाएँ कभी किसी के प्रभाव में नहीं आते। हाँ जो अपवित्र राजाएँ हुए वो जितने-जितने अपवित्र बनते गये उतना-उतना प्रभावित होते गए। पहले द्वापरयुग के आदि में एक मंत्री होता था। ब्राह्मणों को मंत्री बनाया जाता था। राजाएँ ये विश्वास रखते थे कि ये पवित्र रहते हैं, इनके पवित्रता के वायब्रेशन से हमें जो कुछ भी सीख मिलेगी वो अच्छी सीख मिलेगी। तो उनकी बात मानकर राजकाज चलाते थे। बाद में जैसे-जैसे राजाएँ ज्यादा अपवित्र बनते गये वैसे-वैसे मंत्रियों की संख्या भी बढ़ती चली गई और बढ़ते-बढ़ते आज क्या हाल हो गया है? आज गवर्मेन्ट कैसे चलती है? मंत्रियों का हुजूम का हुजूम इकट्ठा हो जाता है और ढेर सारे मंत्रियों की ढेर सारी मंत्रणा जब इकट्ठी होती है तब राजकाज चलता है। तो अनेक मतों से रावण राज्य बन जाता है। अभी तो हमको श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत देने वाला, श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मंत्रणा देने वाला बाप आया हुआ है। अवेलेबुल है। ऐसे भी नहीं कि वो हमको प्राप्त नहीं है। अभी तो कम्यूनिकेशन के साधन भी बढ़ गये हैं। हम चाहें तो कदम-कदम पर बाप की श्रीमत ले सकते हैं; लेकिन वैसा नहीं होता। हम आपस में ही एक दूसरे से बातों का संक्रमण करके और फैसला कर लेते हैं। अभी पूछा जाये तो जो भी पुराने-पुराने एडवान्स पार्टी के भांती हैं उनके अंदर ढेर सारे ऐसे प्रश्न निकलेंगे, भले बाबा के सामने आकर वो बातें भूल जाते हैं; लेकिन घर जाते हैं, दुनियाँवी वायुमण्डल



में पहुँचते हैं, ब्राह्मणों के वायुमण्डल में पहुँचते हैं तो ढेर सारे प्रश्न उमड़ते रहते हैं, घुमड़ते रहते हैं और अंदर-अंदर परेशान होते रहते हैं। परेशान-परे की शान में। पर की शान में पहुँचते रहते हैं। दूसरों की वाचा, दूसरों की दृष्टि, वृत्ति और कर्मेंद्रियों की कृति से प्रभावित होते रहते हैं। प्रभावित माना ही प्रजा। तो ईश्वर बाप के आने का क्या फायदा हुआ? बाप आया भी और बाप की जो श्रेष्ठ मत है श्रीमत है उसको हम जीवन में धारण नहीं कर सके तो पुरुषोत्तम संगमयुग का फायदा क्या हुआ? कितने ऐसे हैं जो ये अनुभव करते हैं कि ये मौजों का जीवन है। सतयुग से भी ज्यादा श्रेष्ठ जीवन हमारा अभी चल रहा है। सतयुग तो बाद में होगा। वो तो 16 कला संपूर्ण जीवन होगा; लेकिन संगमयुग है 16 कला से भी ऊपर का जीवन। मौजों का युग है। मौज मनाने का युग है। अति प्रसन्नता का युग है। इससे ज्यादा शान्ति और किसी युग में हम शरीर के साथ अनुभव नहीं कर सकेंगे। चाहें तो अभी अनुभव कर सकते हैं। वो दु:खों से मुक्ति का वर्सा अभी लेने का टाइम है। जीवन में रहते आनंदमय स्थिति का अनुभव करने का टाइम अभी है। अभी नहीं किया तो कभी नहीं किया। खुद ऐसे श्रेष्ठ वायुमण्डल में रहेंगे, श्रेष्ठ वृत्ति में रहेंगे, श्रेष्ठ वायब्रेशन में रहेंगे तो दूसरी आत्माओं को भी दान दे सकेंगे।

108 की माला का जो संगठन है उसमें सब नम्बरवार हैं। एक मणका सर्वोपरि है, सर्व शक्तिशाली है, तो एक मणका सबसे जास्ती कमजोर भी है; लेकिन उस मणके में कोई विशेष ऐसी शिफ़्त भी है कि वो फूल के सबसे नजदीक है। माला में दो मणके ऊपर हैं। एक तरफ से माला गिनना शुरु करेंगे तो लास्ट मणका भी होगा। लास्ट मणका होते हुए भी वो प्रभु की नजर में, सुप्रीम सोल की नजर में बहुत श्रेष्ठ मणका है। जरुर कोई ऐसी शिफ़्त रही होगी जिसके आधार पर बाप ने उसको अपने नजदीक रखा है। समीपता किस आधार पर आती है ? बाप के समीप पहुँचने की विशेषता क्या है ? सच्चाई और सफाई। जो आत्मा जितनी सच्ची होगी उतनी बाप के नजदीक पहुँचेगी। तो रुद्रमाला के ऊपर के जो दो मणके हैं उसमें एक है माँ और दूसरा है बाप। ये दोनों मणके फूल माना सुप्रीम सोल के बिल्कुल नजदीक हैं। जिन दो से ब्राह्मण बच्चों को विशेष वर्सा मिलता है लेकिन स्नेह के सूत्र में पिरोये हुए होंगे तभी प्राप्ति का अनुभव करेंगे। माँ को बच्चे से स्नेह होता है। बच्चा बीमार पड़ जाता है, सख्त बीमार है, जान का खतरा है, तो माँ को सारी रात नींद नहीं आती है ना। सारी रात कैसे जागती है? जाग लेती है ना। एक रात भी जागती है, दो रात भी जागती है, लागातार भी जागती है। तो परिवार में यही प्यार मात-पिता वाली आत्माओं



के द्वारा प्रैक्टिकल जीवन में अनुभव होना चाहिए ना। पिता की बात छोड़ दो वह तो सर्व समर्थ है।

कोई कहते हैं कि अमृतवेला क्यों नहीं होता है? क्योंकि जो अलौकिक परिवार में असली प्यार है उसका फाउंडेशन ही नहीं पड़ा। इसलिए आत्मा मंथन ही नहीं करती। लौकिक देहभान में, देह और देह के सम्बन्धों में बुद्धि इतनी बिजी रहती है कि दैहिक सम्बधों की जिम्मेवारी तो याद रहती है; लेकिन अलौकिक और पारलौकिक सम्बन्ध की जिम्मेवारी क्या है - वो भूल जाती है।

पहली मुख्य बात है कि जो भी गीतापाठशालाएँ हैं उन गीतापाठशालाओं में हर एक स्टुडेन्ट को अपने टाइम पर पंक्चुअल पहुँचना चाहिए और रेग्युलर क्लास करना चाहिए। **क्लास नहीं करना, क्लास में देर से पहुँचना अथवा क्लास में पंक्चुअल न होना ये छोटी-मोटी बात नहीं है, टीचर का डिस रिगार्ड है!** जिनके अपने मोहल्ले में गीतापाठशाला है उनको ईश्वरीय सेवा के लिए अपनी गीतापाठशाला में जरूर एक घंटा देना चाहिए- ऐसा समझकर कि यही ईश्वरीय सेवा है। संगठित होकर हम जो वायब्रेशन फैलाते हैं, बाबा की याद में बैठते हैं वो वायब्रेशन ही बहुत बडा काम करके दिखाएगा।

वो है एटमिक एनर्जी और ये है आत्मिक एनर्जी। लेकिन



संगठित होकर बैठेंगे ही नहीं, ज्ञान का लेन-देन ही नहीं करेंगे, सेवा के अनुभवों का लेन-देन ही नहीं करेंगे, परिवार को परिवार ही नहीं समझेंगे तो कैसे चलेगा? गीतापाठशालाएँ खुलती जाती हैं, उनकी संख्या बढ़ती जाती है और क्लास में आने वाले स्टुडेन्ट नदारद होते जाते हैं। सब समझे बैठे हैं कि हम गीतापाठशाला में जाकर क्या करेंगे? हम चलते, फिरते, उठते, बैठते अपने घर में ही बैठकर याद कर लें; लेकिन नहीं। संगठन का असर पड़ता है। मुसलमान लोग इस बात को मानते हैं कि घर में रहकर नमाज पढ़ने का जितना शबाब होता है उससे दस गुना मस्जिद् में जाकर पढ़ने से होता है। जामा मस्जिद् में जाकर जो नमाज पढ़ते हैं तो उसका शबाब मस्जिद से भी दस गुना ज्यादा होता है और जो अजमेर शरीफ में जाकर पढ़ते हैं वो उससे भी दस गुना ज्यादा होता है और काबा में जाकर अगर नमाज पढ़ते हैं तो वो अजमेर शरीफ़ से भी सौ गुना ज्यादा होता है। मल्टीप्लिकेशन होता रहता है। महीने का संगठन का जो क्लास होता है वो तो होता ही होता है, वो तो महीने में एक बार होगा ही; लेकिन मोहल्ले के अंदर ही जो गीतापाठशाला खुली हुई है उसमें 10 गुना, 10 गुना, 10 गुना 30 दिन बढ़ायेंगे तो कितना हो जायेगा? आप कहेंगे ये तो मुसलमानों वाली बात सिखा दी। ये मुसलमानों वाली बात नहीं है। ये मंदिर, मस्जिद्, गिरजाघर,



गुरुद्धारे चाहे जहाँ भी चले जाइये हर जगह ये वृत्ति देखने को मिलती है। उसका कारण यही है कि एक स्थान पर संगठित होकर हम जो बैठते हैं, आपस में लेन-देन करते हैं, प्रभु की याद करते हैं उससे वायब्रेशन में बड़ा परिवर्तन आता है। हमारे अंदर स्वयं भी परिवर्तन आता है। तो जब अपना परिवर्तन करेंगे, अपने परिवार का परिवर्तन करेंगे, तब तो विश्व परिवर्तन होगा। मूल बात को ही हम भूल बैठे, क्लास ही करना बंद कर दिया तो ऐसे कैसे चलेगा? ये भी इम्प्योरिटी की निशानी है। हम बाबा की पढ़ाई पढ़ रहे हैं। कोई एक दूसरे से पढ़ाई थोड़े ही पढ़ते हैं।

गीतापाठशाला में जो निमित्त बनाकर बैठाए गये हैं वो तो निमित्त मात्र हैं। ये कोई जरुरी नहीं है कि जो निमित्तमात्र बनाकर बैठाए गये हैं वो ही ऊंच पद पावेंगे। अगर क्लास में आने वाले सभी स्टुडेन्ट संतुष्ट नहीं हैं और क्लास में आने वाले स्टुडेन्ट्स में से कोई ऐसे हैं जो सबको सन्तुष्ट करते हैं, खुद भी संतुष्ट, सर्व आत्माएँ भी उनसे संतुष्ट, मात-पिता भी उनसे संतुष्ट, तो वो ऊँच पद पा जावेंगे। टीचर, टीचर की जगह रह जावेंगे। बाबा तो कहते हैं - ब्रह्माकुमारी कोई राजा कुमारी बनेगी, कोई प्रजा कुमारी बनेगी। कोई जरुरी थोड़े ही है। निमित्त सिर्फ निमित्त मात्र बनाकर बैठाया गया है और अभी

*ओम् शांति।*